Conclusion

निष्पत्ति ::

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के उपरोक्त संपूर्ण अध्ययन, अनुशीलन, एवं विवेचन का सारांश रूप में विहंगावलोकन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है।

हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ एवं महान कवियों की सुदीर्घ परम्परा में निरालाजी का विशिष्ट स्थान है। न केवल कवि रूप में परन्तु एक व्यक्ति के रूप में भी वे श्रेष्ठ एवं महान थे। जीवन के अभावों और दुखों से जूझते हुए उन्होंने कर्म के प्रति निष्ठावान रहकर जिस पुरुषार्थ का परिचय दिया है वह उनकी महानता का प्रमाण है। उनकी आचार-संहिता और आचरण, दोनों के वैशिष्ट्य के साथ उनके व्यक्तित्व में उच्च कोटि के गुणों का सुमेल दृष्टिगत होता है। इसीलिए वे असामान्य व्यक्ति होने के साथ महाव्यक्तित्व सम्पन्न कवि प्रमाणित होते है। एक ओर उनकी चिन्तन प्रियता, चिन्त्य विषय और चिन्तन इन तीनों के प्राधान्य के आधार पर उनके व्यक्तित्व की दार्शनिकता स्पष्ट रूप से उभर आती है, तो दूसरी ओर कला-मानस, और कवि-चेतना की वैविध्यपूर्ण व्याप्ति के आधार पर वे मूलत: और अन्तत: कवि प्रमाणित होते हैं। इस प्रकार निरालाजी दार्शनिक और कवि व्यक्तित्व से सम्पन्न दार्शनिक कवि सिद्ध होते हैं।

हिन्दी साहित्य की सुदीर्घ एवं सुदृढ़ दार्शनिक कवि परम्परा का स्रोत हिन्दी के आदि काल से प्राप्त होता है। यद्यपि ये कवि विशेषत: धार्मिक-दर्शन-संवलित दार्शनिक कवि थे, और गौणत: काव्य-दर्शन-संवलित दार्शनिक कवि। निरालाजी अधार्मिक न होते हुए भी धर्म या धार्मिक सम्प्रदायों से सीमित नहीं थे। अत: उन्हें चिन्तन प्रधान या विचार प्रधान दार्शनिक कहना ही अधिक उचित होगा। क्योंकि उनकी रचनाओं में विशुद्ध चिन्तन मिलता है, फिर वह

धार्मिक दर्शन से प्रेरित हो या धर्मेतर दर्शन से संबंधित।इस प्रकारदार्शनिक कवि के रूप में भी निरालाजी, हिन्दी की दार्शनिक कवि परम्परा की महत्वपूर्ण और विशिष्ट कड़ी होने के साथ उक्त परम्परा में उनका प्रदेय उल्लेखनीय है।

निरालाजी स्वभाव से और विचार से आस्तिक थे।उनकी यह आस्तिकता एक ओर प्राचीन वेदों और धर्म-ग्रंथों के प्रति ज्ञानात्मक है, और दूसरी ओर साकार ईश्वर के प्रति भक्ति भावना युक्त भावात्मक भी है।अतः निरालाजी का उक्त ज्ञानात्मक एवं भावात्मक आस्तिक्य- जिसकी अभिव्यक्ति उनके व्यक्तित्व के अन्तरंग और बहिरंग को समान रूप से रंजित किये हुए है।

यद्यपि प्रधानतः शांकर अद्वैत और विशेषतः स्वामी विवेकानन्द के अद्वैत दर्शन की प्रेरणा और प्रभाव का परिचय निरालाजी ने दिया है, परन्तु अद्वैत दर्शन के अन्य स्वरूपों की निराला-काव्य में नितान्त उपेक्षा नहीं दिखाई देती। वरन् निरालाजी की रचनाओं में भावमूलक आस्तिक्य की परिणति ~~विशिष्ट~~-- विशिष्टाद्वैत तथा शुद्धाद्वैत दर्शन के रूप में भी हुई है।इस दृष्टि से निरालाजी के दार्शनिक कवि व्यक्तित्व में कर्म के साथ ज्ञान और भक्ति का सुमेल भी मिलता है।

कला के प्रति निष्ठावान होने के कारण निरालाजी ने उसकी पुनः प्रतिष्ठा करने के हेतु हिन्दी काव्य की जीर्ण-शीर्ण परम्परा का विरोध करते हुए काव्य के नवीन मूल्यों की स्थापना की है।उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी को अपनी काव्य प्रतिभा का माध्यम बनाकर आशय, विषय, और अभिव्यक्ति के क्षेत्र में क्रांति-कारी प्रयोग किये हैं।एक ओर काव्य के आशय और विषय के क्षेत्र में उनकी भाव-कला का अभिनव परिचय मिलता है, तो दूसरी ओर काव्य की संरचना या शिल्प के क्षेत्र में उनके कला-शिल्प की मौलिकता प्रमाणित होती है।

निराला-काव्य के सूक्ष्म अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि,

उसकी भावराशि एक ओर जितनी व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण है, तो दूसरीओर वह अत्यन्त मौलिक भी भी है। आशय यह कि निरालाजी ने विविध अनुभूतियों का अपने काव्य में ऐसा सुसम्पन्न संगुंफन किया है कि उनसे ध्वनित विविध भाव अपनी स्वकीय विशिष्टताओं के साथ उभर कर आये हैं। निराला-काव्य-प्रतिभा का यह भाव का रूपाधायकत्व एक ऐसा गुण है, जो हिन्दी के सूर, तुलसी जैसे किन्हीं विशिष्ट कवियों के काव्यों में दृष्टिगोचर होता है।

प्रवृत्ति से विद्रोही तथा क्रांतकारी एवं प्रकृति से सृजनशील एवं मौलिक-प्रतिभा सम्पन्न होने के कारण, महाकवि निराला ने अपने काव्य के कला-शिल्प में ऐसे मौलिक एवं सफल प्रयोग किए हैं, कि जिनकी व्याख्या करने में पारम्परिक हिन्दी काव्य शास्त्र समर्थ नहीं समझा जा सकता। आशय यह कि निराला-काव्य-शिल्प के अंतर्गत छंद (पद शिल्प के), वाक्य-शिल्प के अंतर्गत बिम्ब, एवं प्रतीक विधान तथा महावाक्य-शिल्प के अंतर्गत काव्य-रूप की ऐसी नवीन एवं कलात्मक छटाएं दृष्टि-गत होती हैं कि निराला जी को सहज ही सफल शिल्पी-कवि कहा जा सकता है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि ज्योति, जागरण, विद्रोह, क्रांति, चिन्तन, ज्ञान, भक्ति, कर्म, योग, मौन और भाव के द्रष्टा, सृष्टा, महाशिल्पी, महाकवि निराला मूलतः और अंततः वाणी (मां और हिन्दी) के ही सेवक, साधक और उपासक थे।